शैली विज्ञान का सैद्धान्तिक स्वरुप

डॉ0 सरिता मिश्रा*

प्रत्येक युग की अपनी विचाराधारा होती है। साहित्यिक–समीक्षा युग की विचारधारा से प्रभावित होती है। प्राचीन काल एवं मध्य काल में दार्शनिक विचारधाराओं का समाज में वर्चस्व होने के कारण साहित्य–समीक्षा दार्शनिक सिद्धान्तों पर अबलम्बित थी। कालान्तर में मनोविज्ञान एवं समाजशास्त्र ने साहित्य–आलोचना के क्षेत्र में पदार्पण किया और समीक्षकों ने मनोवैज्ञानिक धरातल पर साहित्य का मूल्यांकन प्रारम्भ किया। धीरे–धीरे भाषाविज्ञान के विकास ने साहित्य–समीक्षा को प्रभावित करना प्रारम्भ किया। भाषा वैज्ञानिकों ने भाषा वैज्ञानिक दृष्टि से साहित्य–समीक्षा की आवश्यकता पर बल दिया। परिणामस्वरुप भाषा और साहित्य के क्षेत्रों में अन्तर–शास्त्रीय अध्ययन–प्रणाली के रुप में शैली विज्ञान का उदय हुआ।1 इस प्रकार शैली विज्ञान भाषाशास्त्र और साहित्य शास्त्र की संधि पर साहित्य के जांचने परखने की भाषावादी दृष्टि है।2 संक्षेप में, शैली विज्ञान साहित्य के अध्ययन–विश्लेषण की वैज्ञानिक पद्धति के रुप मे विकसित हुआ।

शैली विज्ञान की परम्परा भारतीय (संस्कृत) समीक्षकों और पाश्चात्य समीक्षकों मे समानरुप से परिलक्षित होती है। यद्यपि भाषावादी दृष्टिकोण से इसे नवीन विज्ञान माना जाता है, किन्तु यह नवीन नहीं है, बल्कि इसका संदर्भ–परिवर्तित हुआ है। यूरोप में प्लेटों और प्लेटिनस तथा भारत में शैव एवं वैष्णव दार्शनिकों ने दार्शनिक आधार पर साहित्य का मूल्यांकन किया। उनके लिये कविता आत्मतत्व की अभिव्यक्ति थी।3

आई0ए0 रिचर्ड्स ने मनोवैज्ञानिक ढंग से कविता पर विचार करते हुए लिखा है ''हम या ता कलाकार की अनुभूति की चर्चा करते है या व्युत्पनन/पाठक की जिसकी संवेदना शक्ति निर्दोष है या किसी आदर्श पाठक की या अपनी अनुभूति की ही चर्चा करते हैं। इन संभाव्य परिभाषाओं में से किसे स्वीकार किया जाये।''

मनोविश्लेषण शास्त्र के आचार्य कविता या साहित्य को दमित वासनाओं की प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति मानते हैं। भाषावादी आलोचकों के अनुसार शैलीविज्ञान साहित्य समीक्षा का वैज्ञानिक सिद्धान्त है। उनकी दृष्टि दर्शन शास्त्र, मनोविज्ञान, समाजशास्त्र आदि बाह्य तत्व हैं, भाषाविज्ञान ही साहित्य का अंतरंग तत्व है। वस्तुततः शैली विज्ञान एक विविध संभावनाओं से पूर्व अतएव विवादग्रस्त विषय है। अन्तर क्षेत्रीय अध्ययन प्रणाली होने के कारण इसका विवाद मुक्त रहना भी संभव नहीं है।4

आर्य महिला पी.जी. कालेज, वाराणसी।

शैलीविज्ञान के संबंध में विज्ञानों ने अनेक विवाद भी खड़े किये है। सर्वप्रथम विवाद यह है कि साहित्य समीक्षा के लिए समीक्षा–शास्त्र पर्याप्त है। अतः यह भाषा वैज्ञानिकों का साहित्य के क्षेत्र में अनाधिकार प्रवेश है। जहाँ तक अर्थग्रहण का प्रश्न है, ''अर्थ की प्रकृति मानवीय अनुभव के अनुकूल ही संश्लिष्ट है। यह संश्लिष्टता शैली विज्ञान की गणितीय शैली में खण्ड–खण्ड हो जाती है। शैली विज्ञान का उपयोग भाषा विान के क्षेत्र में कुछ हो तो हो, साहित्य के क्षेत्र में तो उसकी सार्थकता संदिग्ध ही है।5

यह आपत्ति उतनी ठोस नहीं है। क्योकि युगीन परिवेश अब कल्पना प्रसूत सिद्धान्तों में विश्वास नहीं करता है। यदि शैलीविज्ञान पूर्व समीक्षा विज्ञान नहीं है तो भी यह उन भाषित समस्याओं का निराकरण करने में समर्थ है, जिनका निराकरण शुद्ध साहित्य समीक्षा के सिद्धान्तों द्वारा नहीं हो सकता है। आज युगानुरुप चिन्तन पद्धति की आवश्यकता है। भाषा के काव्य–फल के प्रति बधिर भाषा वैज्ञानिक और भाषा वैज्ञानिक समस्याओं से अपरिचित साहित्यशास्त्री, दोनों ही समाज रुप से अपने समय से बहुत पीछे है।6

इस प्रकार स्पष्ट है कि शैलीविज्ञान आधुनिक साहित्य समीक्षा का भाषावैज्ञानिक सिद्धान्त है। यह प्रचलित समीक्षा सिद्धान्तों का विरोधी नहीं है बल्कि यह समीक्षा को पूर्ण बनाता है। शैलीविज्ञान के संबंध में दूसरा विवाद इसके नामकरण के संबंध में है। यद्यपि यह विवाद 'नाम' का है। अँग्रेजी में 'स्टाईल' शब्द है जिसके अर्थ के रुप मे हिन्दी में 'शैली' शब्द रुढ़ हो चुका है किन्तु कुछ विद्वानों के मतानुसार 'स्टाईल के लिये 'रीति' शब्द अधिक उपयुक्त है। 'स्टाइल' शब्द लैटिन भाषा के 'स्टाईलस' से बना है जिसका अर्थ है कलम। भारतीय चित्रकला में शैली शब्द का प्रयोग 'कलम– अर्थ में प्रयुक्त होता है। आक्सफोर्ड इंग्लिश डिक्शनरी के अनुसार 'स्टाईल' का अर्थ लेखन, लेखन–वाचन विधि तथा व्यापक अर्थ में अभिव्यक्ति की विधि है।

इस प्रकार 'शैली' साहित्यिक अभिव्यक्ति पद्धति के लिये प्रयुक्त शब्द है।

'रीति' शब्द की व्युत्पत्ति ''रीयते गम्यतेऽनेनेति रीति'' के रुप में की जाती है। कुछ लोग दिवादिगण की अकर्मक धातु 'रीड्0 स्रवणे' तथा क्रयादिगण की सकर्मक धातु 'रीगतिरेषणयों; से इसकी उत्पत्ति माने हैं। सायण–माधवी धातु वृत्ति में रीड्. से ही इसे संबंधित किया गया है। 'रीड्.स्रवणे' स्रवित होने अथवा प्रवाहित होने के अर्थ में प्रयुक्त है। अर्थ परिवर्तन से यही 'रीति शब्द मार्ग या पथ का बोध कराता है धीरे–धीरे काव्य प्रसंग में यह काव्य सरणि, काव्य मार्ग या काव्यपथ का अर्थ प्रदान करने लगा।7

''शैली का प्रयोग प्राचीन भारतीय वाड्.मय मे साहित्येत्तर विधाओं के संदर्भ में प्रादेशिक विशेषताओं को जतलाने के लिये हुआ है या किसी व्यक्ति की साहित्यिक

अभिव्यक्ति की विशेषताओं को जताने के लिये आधुनिक समीक्षा साहित्य में हुआ है।8 अतः 'स्टाईल' के लिये उपयुक्त शब्द 'रीति' है। किन्तु भारतीय वाड्.मय में 'शैली' शब्द का प्रयोग अत्यन्त प्राचीन है।9 शैली शब्द की व्युपत्ति शाकटायन के उणादि सूत्र (4–38) के अनुसार शी (शीड्.शयने) धातु में त्नक प्रत्यय के योग से होती है। यास्क निरुक्त में 'शील' शब्द का प्रयोग मिलता है जिससे शैली शब्द व्युत्पन्न माना जाता है। पातंजलि महाभाष्य के ''एषा हि आचार्यस्य शैली लक्ष्यते'' से स्पष्ट होता है कि शैली शब्द प्राचीन साहित्य में प्रचलित था।10 प्रदीपकार कय्यट ने भी शैली शब्द का प्रयोग किया है। 'शीले स्वभावे भवावृत्तिः शैली।'' मुग्ध–बोध व्याकरण (13 वीं सदी) की टीका में दुर्गादास ने लिखा है, ''आचार्याणां इयं शैली यत्े सामान्येनाभिधाय विशेषण विवृणोति।'' उपर्युक्त उद्धरणों से स्पष्ट होता है कि 'शैली' शब्द का प्रयोग साहित्यिक विधाओं के संदर्भ में भी हेाता रहा है। अतः 'स्टाईल' के लिये रीति शब्द उपयुक्त नहीं होता। दूसरी आपत्ति 'रीति' शब्द को स्वीकार करने में यह भी है कि 'रीति' का प्रयोग गौड़ी, पांचाली, वैदर्भी, अवंतिका तथा भागधी आदि के लिये होता है। भामह, दण्डी, वायन, रुद्रट, भोजराज, आनन्दवर्धन, कुन्तक, मम्मट आदि मनीषियों ने रचना की संरचनागत और प्रभावात्मक विशेषताओं को दृष्टि में रखते हुए 'रीति' के असमासा, मध्यसमासा, दीर्घसमासा, परुषा, कोमला आदि भेदों को किया है। वामन ने विशिष्ट पद–रचना को आनन्दवर्धन ने संघटना को, राजशेखर और भोजराज ने वचन विन्यास वक्रता को विश्वनाथ ने पद संघटना को –रीति–' माना है। ऐसी स्थिति में 'रीति' शब्द 'स्टाईल– के लिये उपयुक्त नहीं प्रतीत होता है। 'शैली' के समर्थन में यह तर्क भी प्रस्तुत किया जा सकतो है कि शैली–वैयक्तिक विशेषता है।'' शैली का अर्थ है कलात्मक अभिव्यक्ति में व्यक्तित्व की विधमानता।12

भारतीय दृष्टिकोण से भी व्यक्तित्व से जुड़े होने की बात 'शील– शब्द से प्रकट होती है 'शील' शब्द भी शैली के ही सन्निकट है। ''अभ्यासे भूयां समर्थमन्यन्ते। यथा'' अहो दर्शनीया अहोदर्शनीया'' इति परुच्छेपस्य शील। इस प्रकार शैली शब्द ही 'स्टाईल– के लिये उपयुक्त प्रतीत होता है। लेकिन जब शैली विज्ञान को वस्तुनिष्ठ अध्ययन प्रणाली कहा जाता है। तब यह साहित्य समीक्षा से एक रुप हो जाता है। यह वस्तुतः साहित्य समीक्षा ही है। जिसमें व्यक्तिगत रुचि विरुचि का तत्व निःशेष हेा जाता है।13 यदि इस कथन पर विचार किया जाय तो रीति शब्द वस्तुनिष्ठता का सही अर्थ वहन करने में समर्थ है। डॉ0 नगेन्द्र ने 'शैली' शब्छ को ही 'स्टाईल के लिये स्वीकार किया है। 'रीति शब्द शास्त्रारुढ़ बन कर रह गया है और उस पुराने सिक्के को आज चालू करना कठिन है, जब कि 'स्टाईल' के सम्पूर्ण अर्थ को वहन करता हुआ 'शैली' शब्द हिन्दी आलोचना का टकसली सिक्का है।14

इस प्रकार अंग्रेजी 'स्टाईलिस्टिक्स' के लिय शैली शास्त्र, शैली विज्ञान,

रीतिविज्ञान, शैलीमीमांसा आदि नामों का भी विद्वानों ने प्रयोग किया है किन्तु शैली विज्ञान अधिक प्रचलन में है। नामकरण के शुभ–मुर्हूत में ही विवादग्रस्त 'शैली विज्ञान' को परिभाषित करना सरल नहीं है। अनेक विद्वानों ने शैलीविज्ञान की परिभाषायें दी हैं किन्तु सर्वमान्य परिभाषा अभी तक नहीं दी जा सकी है।

'शैली की प्रकृति'

शैली की प्रकृति के संबंध में विद्वानों में मतभेद है। साहित्य भाषा–प्रयोग की कला है। अर्थात विशेष प्रयोग विधियां शैली है। उसकी समीक्षा इसी प्रयोग विधि या शैली का विवेचन विश्लेषण है। और इस विवेचन विश्लेषण की नियम संहिता है। शैली विज्ञान का अर्थ है शैली का अध्ययन।16

शैली की प्रकृति के संबंध में निम्नलिखित परिभाषायें उल्लेखनीय हैः–

1. ''भाषा तथा अभिव्यक्ति के उद्देश्य और प्रसंग को जोड़ने वाले सूत्र को शैली कहते हैं। शैली की प्रकृति अमूर्त है।17
2. ''शैली में प्रतिपाद्य विषय से निरपेक्ष एक विशेष प्रकार का बौद्धिक आनन्द देने की क्षमता होती है।18
3. ''शैली के विवेचन मे सम्पूर्ण साहित्यिक सौन्दर्यशास्त्र तथा आलोचना की सिद्धान्तसंहिता आ जायेगी।''19
4. ''किसी वक्तव्य की शैली उसकी ऐसी भाषिक विशेषताओं में निहित रहती है। जो उसे समग्र भाषा में प्रयुक्त समान भाषिक रुपकों से पृथक करती है।''20
5. एक ही भाषा की दो उक्तियाँ जिनका वाच्यार्थ प्रायः समान होते हुए भी भाषिक संरचना भिन्न होती है, शैली की दृष्टि से भिन्न मानी जा सकती है।''21
6. ''विपयन ही शैली है।''22
7. भाषिक अर्थ में 'शैली' शब्द प्रायः सामान्य से भिन्न विशेष प्रयोग का वाचक है।''23

शैली की प्रकृति उपर्युक्त परिभाषाओं से स्पष्ट हो जाती है। विद्वानों ने शैली की जो परिभाषाएँ दी हैं उनके आधार पर शैली की समस्त परिभाषाओं को निम्नांकित वर्गो में विभाजित किया जा सकता है।

कः– शैली होने का एक ढंग है।24

खः– शैली विषयवस्तु के अंतस् को उद्घाटित करने का रचना सिद्धान्त है।

गेटे के अनुसार 'शैली' रचना का वह उच्च और सक्रिय सिद्धान्त है जिसके द्वारा लेखक अपने विषय की गहराई में उतर कर विषय के अंतस् का उद्घाटन करता है।25

गः– शैली चयन है।

सी0एफ0 हाकेट ने माना है कि शैली चयन है। उनके अनुसार एक ही भाषा की दो उक्तियां जिनका वाच्यार्थ प्रायः समान होते हुए भी भाषिक संरचना भिन्न होती है, शैली की दृष्टि से भिन्न मानी जा सकती है।

घ– अच्छी शैली लगभग समानार्थी शब्दों में से उपयुक्त चयन से बनती है। बारवर्ग महोदय अच्छी शैली के सम्बन्ध में इसी सिद्धान्त के समर्थक हैं।

चः– शैली शब्दों का चयन तथा वाक्य में उनका क्रमण है। क्लीन्थ, ब्रुक्स तथा रावर्ट पी0 वोरेन आदि विद्वान शैली की इस परिभाषा से सहमत है।

छः– वेलेण्डर तथा आंसगुड महोदय के अनुसर शैली विचलन है।

जः– सपोर्टा तथा हिल के अनुसार शैली अन्तर्वाक्यीय वैशिष्ट्य है।

झः– शैली भाषा की उस विशेषता का नाम है जो किसी के भाव अथवा विचार को ठीक ठीक व्यक्त करती है। जे0एम0 मरी ने शैली की उपर्युक्त परिभाषा दी है।

ञः– शैली विचारों की प्रतिलिपि है।

किसी लेखक की शैली उसके मस्तिष्क की सच्ची प्रतिलिपि होती है। प्लेटो ने भी कहा है कि जब विचार को रुप दिया जाता है तो शैली का जन्म होता है। गोपनहारे, चेस्टर फिल्ड, न्यूमैंन, एलिस प्राउस्ट आदि विद्वान इस मत के समर्थक है।

टः– शैली विचार तथा भाषा दोनों का वैशिष्ट्य है।

ठः– शैली कथ्य (विचार एवं भाव) और भाषा से अलग एक प्रभावित तत्व है। इस मत के समर्थक सेंट पाल, कनयवर्क, पालगुडमैंन वार्ल्स वैली, श्लिडरत्न आदि विद्वान हैं।

डः– शैली वैयक्तिक विशेषता है। फ्रांसीसी विद्वान बफो का यह कथन अत्यन्त धार्मिक है।

ढः– शेरेन के अनुसार शैली का अर्थ है कलात्मक अभिव्यक्ति में व्यक्तित्व की विद्यमानता।

णः– डॉ0 जॉनसन के अनुसारः– हर व्यक्ति की अपनी शैली हौती है।

तः– ब्राउन महोदय ने लिखा कि लेखक की शैली उसकी उतनी ही अपनी होती है जितनी उसकी अंगुली की छाप।

थः– ददत्ने के अनुसार माध्यम संघटक तथा संरचना में व्यक्त कलाकार का व्यक्तित्व ही शैली है।

दः– भाषिक अभिव्यक्ति के विशिष्ट ढंग को शैली कहते है।26

इस प्रकार शैली की विभिन्न परिभाषायें दी गयी हैं। इनके आधार पर शैली को दो रुपों में व्यक्त किया जा सकता है।

1. संकुचित अर्थ में शैली भाषिक उपकरणों पर आधारित विशिष्ट भाषिक अभिव्यक्ति है।

2. व्यापक अर्थ में शैली सुचयनित, सुसंगठित , भाषिक अलंकरणों से सज्जित, और कलाकर के व्यक्तित्व तथा विषय से सम्बद्ध मर्मस्पर्शी भाषिक अभिव्यक्ति है।

शैली को परिभाषित करने के बाद शैलीविज्ञान के विषय में श्री जी.डब्लू टर्नर महोदय का कथन द्रष्टव्य है। उनकी दृष्टि में भाषा प्रयोग का वैज्ञानिक वर्णन करने वाला विज्ञान शैली विज्ञान है।27 शैली विज्ञान के सम्बन्ध में निन्नलिखित परिभाषाएं उल्लेखनीय हैंः– शैली विज्ञान साहित्यिक भाषा के सर्जनात्मक प्रयोगों का व्याकारण है।28 शैली विज्ञान वस्तुन्ष्ठि, वैज्ञानिक क्रमबद्ध विज्ञान है जो भाषा प्रयोग का अध्ययन करता है।29 इस परिभाषा से स्पष्ट होता है कि शैली विज्ञान भाषा की वस्तुनिष्ठता एवं वैज्ञानिकता का अध्ययन है अर्थात् शैली विज्ञान 'शैली' का अध्ययन है। याकौत्सन एवं चार्ल्सवेली के मतानुसार यह भाषाविज्ञान की एक शाखा है।

शैली विज्ञान प्रकृत भाषा का अध्ययन है; जिसे हम सब बोलते है। यह न तो शुद्ध तर्क (दर्शन) का अनुगत है और न कला का; इसके सामने न कोई तार्किक (दार्शनिक) आदर्श रहता है न साहित्यिक।30 शैली विज्ञान वस्तुतः साहित्य के अध्ययन विश्लेषण की वैज्ञानिक पद्धति है। सिद्धान्त के रुप में इसकी दृष्टि भाषावादी है। भाषावादी सिद्धान्त के रुप में उसकी यह प्रमुख मान्यता है कि साहित्य शाब्दिक कला है।31 इस सम्बन्ध में अशोक रा0 केलकर ने लिखा है कि भाषा साहित्य नहीं है। भाषा साहित्य की कला सामग्री है। कला माध्यम नहीं है। भाषा वह सामग्रीं है जिससे साहित्य की मूर्तियां गढ़ी जाती है।32

चूँकि भाषाविज्ञान भाषिक रचना का सार्वभौम विज्ञान है। इसिलए काव्य शास्त्र को भाषाविज्ञान का सहज अंग माना जा सकता है।33

उपर्युक्त परिभाषाओं के आधार पर यह स्पष्ट हो जाता है कि शैली विज्ञान साहित्यिक शैली का वैज्ञानिक अध्ययन है।

शैली विज्ञान का क्षेत्र

शैली विज्ञान का उद्भव आज से लगभग 25 वर्ष पहले हुआ है। भाषा वैज्ञानिकों ने भाषा विज्ञान का पूर्ण अध्ययन करेन के लिये साहित्य में अनुस्यूत भाषिक विधानों के अध्ययन पर बल दिया। परिणामतः शैली विज्ञान वैज्ञानिक प्रविधियों के आधार पर साहित्य का भाषिक अध्यनन प्रस्तुत करता है। प्रोफसेर नार्थ कहते है कि शैली विज्ञान 'सामान्य भाषा' के भाषाविज्ञान से सर्वथा भिन्न विशेष भाषा (वैयक्तिक भाषा) का विज्ञान है।34 ऐसी स्थिति में शैली विज्ञान भाषा विज्ञान के अन्तर्गत आ जाता है। इसके विपरीत क्रेसो, स्पिट्जर उलमान, रेने बैलेक, एक्विस्ट आदि शैली विज्ञान को साहित्यिक शैली का अध्ययन मानते हैं। हम तो बल्कि यहॉ तक कहेंगे कि साहित्यिक शैली वैज्ञानिक अध्ययन का सबसे उत्तम क्षेत्र है, ठीक इसलिये कि यहॉ भाषिक चयन अनधिक

स्वैच्छिक एवं सुविचारित है।35 लिओं स्पिट्जर के अनुसार रचना की व्याख्या का अर्थ उसके सौन्दर्य की समीक्षा है।36 इस परिभाषा के अनुसार साहित्यिक कृति की आन्तरिक रचना का अध्ययन शैलीविज्ञान के क्षेत्र में आ जाता है। सौन्दर्य विषयक जिज्ञासा के बिना शैली विज्ञान साहित्यिक विधा का अंग नहीं है।37 शैली विज्ञान के क्षेत्र पर विचार करते हुए ज्योफ्रे लीच महोदय ने स्वीकार किया है कि शैलीविज्ञान साहित्य में प्रयुक्त भाषा का अध्ययन है। यद्यपि वैली ने वयवहारगत जीवंत भाषा को ही शैली विज्ञान का विषय माना है और साहित्यिक भाषा शैली का बहिष्कार किया है किन्तु बहुमत भाषा–शैली के भाषा वैज्ञानिक अध्ययन को ही शैली विज्ञान मानता है। वस्तुतः शैली विज्ञान भाषा वैज्ञानिक सिद्धान्तों पर आधारित साहित्य समीक्षा का नवीन आयाम है। शैली विज्ञान का वास्तविक विवेच्य विषय साहित्यिक शैली ही है, जो प्रायोगिक शैली का स्फटिक रुप है।39 यदि बैली के अनुसार जीवंत भाषा को ही शैली विज्ञान की परिधि में माना जाय तब प्रायोगिक भाषा के रागात्मक तथा व्यंजकतत्वों के विवेचन पर आधारित होने के कारण शैली विज्ञान की भाषा विज्ञान से स्वतंत्र सत्ता माननी पड़ेगी। भाषा विज्ञान के नियमों तथा प्रविधियों के अनुसार साहित्य के शाब्दिक विधान का रुपात्मक अध्ययन शैली विज्ञान है। इसी अर्थ में वह सैद्धान्तिक स्तर पर भाषाविज्ञान और व्यवहारिक स्तर पर भाषाविज्ञान का तथा व्यवहारिक साहित्य समीक्षा का संयोजक सेतु है।40 ग्राहम हफ ने भी शैली विज्ञान की इसी संभावना पर जोर दिया है।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि शैली विज्ञान का क्षेत्र न तो भाषा विज्ञान तक सीमित है और न तो पूर्णरुपेण साहित्य समीक्षा में व्याप्त है बल्कि यह दोनों के बीच सामंजस्य स्थापित करने वाला विज्ञान है।

शैली विज्ञान की शाखाएं

यद्यपि शैली विज्ञान की स्वतंत्र सत्ता अभी तक स्थापित नहीं हो पायी है। किन्तु अध्ययन विश्लेषण की विविधता के आधार पर इसकी कई शाखाएं मानते है।

डॉ0 भोला नाथ तिवारी ''समान्तरता'' को शैली विज्ञान की एक शाखा मानते हैं। इसके अतिरिक्त उन्होंने ध्वनीय, शब्दीय, रुपीय, वाक्यीय, लेखीय आदि शैली विज्ञान की शाखाओं में विभक्त किया है।42

1. भाषागत उपकरणों पर आधारित भाषा शैली विज्ञान।
2. कृति के घटकों पर आधारित साहित्य शैली विज्ञान।

इसके अतिरिक्त दो भाषाओं में प्रयुक्त वाक्यों का तुलनात्मक अध्ययन करने वाला व्यतिरेकी शैली विज्ञान भी है। श्री एस0एस0 मिश्र ने ऐतिहासिक शैली विज्ञान की ओर भी संकेत किया है।43

इस प्रकार शैली विज्ञान की निम्नांकित शाखायें मानी जा सकती है।

1. ध्वनीय शैली विज्ञान।
2. शब्दीय शैली विज्ञान।

3. अर्थीय शैली विज्ञान।
4. रुपीय शैली विज्ञान।
5. वाक्यीय शैली विज्ञान।
6. लेखीय शैली विज्ञान।
7. व्यतिरेकी शैली विज्ञान।
8. ऐतिहासिक शैली विज्ञान।

''शैली विज्ञान की अध्ययन प्रणाली''

शैली विज्ञान साहित्य आलोचना का सिद्धान्त भी है और प्रणाली भी। यह साधन का विश्लेषण कर के साध्य को प्राप्त करता है। इसकी विश्लेषण प्रणाली भाषाविज्ञान जैसी वस्तुवादी है। अतः यह अपने चिन्तन में भाषावादी अध्ययन प्रणाली में वस्तुवादी है। वास्तव में शैली विज्ञान अतार्किक सम्बन्ध विधान को ही भाषिक काल की प्रमुख उपलिब्ध माना जाता है। साहित्यिक रचना भाषा की अपनी सीमा में बँधी एक स्वनिष्ठ ईकाई है। साहित्यिक कृति भाषा को न केवल अभिव्यक्ति का माध्यम बनाती है अपितु स्वयं भाषा के भीतर ही अपना जन्म धारण करती है।44 शैली विज्ञान वर्ण, शब्द, वाक्य, अर्थ, संदर्भ का अध्ययन भाषा वैज्ञानिक पद्धति से करता है। यह अध्ययन प्रक्रिया में निम्नलिखित विधियों का सहारा लेता है।45

1.	प्रेक्षण पद्धति	सांख्यिकीय पद्धति।
2.	रुप पक्ष	वस्तुपक्ष
3.	खण्डवादी	अखण्डवादी
4.	अन्तर्लक्षी	बहिर्लक्षी
5.	वर्णानात्मक	तुलनात्मक
6.	समकालीन	कालक्रमिक
7.	अगमनात्मक	निगमनात्मक।

इस प्रकार शैली विज्ञान की अध्ययन प्रणाली वैज्ञानिक एवं वस्तुपरक है।

जैसा कि उपर कहा जा चुका है कि शैली विज्ञान भाषा वैज्ञानिक पद्धतियों से ही अध्ययन विश्लेषण करता है। किन्तु शैली विज्ञान में साभिप्राय व्यक्तिरिक्तता या विकल्प ढूढने में अधिक बल दिया जाता है। ''सारांश यह है कि व्याकरण की दृष्टि से क्या संगत है, क्या असंगत है यह रीति विज्ञान में अपेक्षाकृत महत्व रखता है, जितना कि विभिन्न विकल्पों के बीच में से उचित और अनुरुप विकल्प का बिधान क्यों किया गया है इसकी साभिप्रायता के लिये कुछ निश्चित सिद्धान्त निर्धारित करना।46 रीति की धारणा विकल्प मानकर चलती है कि भाषा व्यवस्था द्वारा प्रस्तुत विभिन्न रुपों और रचनाओं में से वक्ता तथा लेखक द्वारा चयन भी इसी धारणा के अन्तर्गत अन्तर्निहित है। व्यवस्था होने के कारण भाषा को कुछ न कुछ नियंत्रण लाना

ही होता है और इसी लिये उसकी प्रवृत्ति संख्यात्मक विश्लेषण द्वारा ही अन्वेष्य है। 47 रुसी विद्वान झिरन्मुत्स्की (1928) के अनुसार कविता का उपाख्यान न तो विम्ब है और न भावनायें। वह मात्र शब्द होता है क्योंकि कविता प्रवृत्ति रुप में शाब्दिक कला है। अज्ञेय ने स्वीकार किया है कि काव्य सबसे पहले शब्द है औ और सबसे अन्त में यही बात बच जाती है कि काव्य शब्द है। 48

इससे स्पष्ट कि काव्य भाषा में प्रयुक्त शब्दों का अध्ययन ही शैली विज्ञान का अभीष्ट है यह शब्दों रुपों एवं ध्वनियों के आधार पर काव्य भाषा का अध्ययन करता है प्रस्तुतीकरण की अभिव्यक्ति प्रणाली को कविता अपनाती है। उसकी इकाई के रुप में बिम्ब निर्माण नहीं अपितु शब्द होता है। अपनी अध्ययन प्रणाली के आधारपर शैलीविज्ञान; साहित्य, भाषाविज्ञान, सौन्दर्य शास्त्र, मनोविज्ञान, दर्शन, समाजशास्त्र आदि से भी संबंधित है।

शैली विज्ञान के सैद्धान्तिक पहलुओं पर विचारोपरान्त हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि शैली विज्ञान भाषाविज्ञान की वह शाखा है जो काव्य भाषा में प्रयुक्त ध्वनियों (स्वनिमों) शब्दों, अर्थो एवं वाक्यों का अध्ययन करता है, इसके क्षेत्र में चयन, विचलन साहश्य विधान आदि का अध्ययन एवं विश्लेषण समाहित है। अतः शैली, विज्ञान भाषावादी दृष्टि से शैली का वस्तुनिष्ठ एवं भाषा वैज्ञानिक अध्ययन है।

संदर्भः–

1. डॉ0 सुरेश कुमार शैलीविज्ञान (प्रथम संस्करण 1977) आमुख।
2. डॉ0 भोला नाथ तिवारी शैली विज्ञान(प्रथम संस्करण 1977) भूमिका।
3. डॉ0 नगेन्द्र शैली विज्ञान (1977) पृष्ठ–3
4. डॉ0 रविन्द्र नाथ श्रीवास्तव, शैली व शैली विज्ञान (1976 पृष्ठ 6) भूमिका।
5. श्री रामस्वरुप चतुर्वेदी, काव्यभाषा और बिम्ब प्रक्रिया।
   शैली और शैली विज्ञान (डॉ0 रविन्द्रनाथ श्रीवास्तव) पृष्ठ 157
6. याकोब्सन, लिग्विस्टिक्स इन सिबेक (1960)
7. डॉ0 भोलानाथ तिवारी शैली विज्ञान (1977) पृष्ठ 10
8. डॉ0 विद्यानिवास मिश्र, रीतिविज्ञान (1973) पृष्ठ–14
9. डॉ0 भोलानाथ तिवारी शैली विज्ञान (1977) पृष्ठ–11
10. पंतजलि महाभाष्य (2–1–3) झण्झर संस्करण पृष्ठ 563
11. बफो
12. शेरन
13. डॉ0 नगेन्द्र, शैली विज्ञान (1977) पृष्ठ–5 (बाल्सर की हिन्दी अनुवाद)।
14. डॉ0 नगेन्द्र शैली विज्ञान (1977), पृष्ठ–6 (वाल्सर का हिन्दी अनुवाद)।
15. डॉ0 नगेन्द्र शैली विज्ञान (1977) पृष्ठ 6
16. पी0डब्लू0 टर्नर, 'स्टाईलिस्टिक पृष्ठ 7

17. डॉ0 सुरेश कुमार शैली विज्ञान पृष्ठ 62
18. डिक्वीन्सी।
19. जे0एम0 मरी0, नवां संस्करण (1956) पृष्ठ 3
20. वर्नाड वलास– लिग्विटिक स्ट्रक्चर एण्ड लिग्विंस्टिक एनलिसिस।
21. सी.एफ.हाकेत (1958) ए कोर्स इन माडर्न लिगिस्टिक्स।
22. एन0ई0 एक्विस्ट (1964) आन डिफाइनिंग स्टाइल।
23. एरिक ब्लेडर पेंज (1964) हिन्दी अनुवाद
24. हेमरी भोनियर।
25. स्पेंशर पृष्ठ (10–11)
26. डॉ0 भोलानाथ तिवारी शैली विज्ञान (1977)
27. जी.डब्लू टर्नर स्टाईलिस्टिक्स पृष्ठ 7 (1977)
28. डॉ0 भोला नाथ तिवारी, शैली विज्ञान (1977)
29. डॉ0 सुरेश व डॉ0 श्रीवास्तव शैली व शैली विज्ञान (पृष्ठ–107) डॉ0 आर0एस0 गुप्त–(ए डिफेन्स आफ स्टाईलिस्टिक)
30. चार्ल्सवेली लालान्नगाए लावी पृष्ठ–14
31. डॉ0 रवीन्द्र नाथ श्रीवास्तव, शैली विज्ञान और आलोचना की नई भूमिका (1972) भूमिका।
32. अशोक रा0 केलकर डॉ0 कुमार और डॉ0 श्रीवास्तव द्वारा सम्पादिक शैली और शैली विज्ञान पृष्ठ 107
33. याकोवसन, स्टाईल इन लैंग्वेज (1964) पृष्ठ 350
34. डॉ0 नगेनद्र (1977) शैली विाान पृष्ठ 16
35. क्रेसों, लं0 स्टील अं से तकनीक (1947) पृष्ठ 3
36. लिओ स्पिट्जर, लिंग्विस्टिक्स एण्ड लिटरेरी हिस्ट्री पृष्ठ 28
37. रेने बेलेक, थिअरी ऑफ लिटिरेचर (1966) पृष्ठ 180
38. ए लिंग्विस्टिक गाइड टू इंग्लिश पोएट्री (1974) पृष्ठ 1
39. डॉ0 नगेन्द्र (1977) पृष्ठ 20
40. डॉ0 नगेन्द्र, शैली विज्ञान (1977) पृष्ठ 22
41. डॉ0 भोलानाथ तिवारी शैली विज्ञान (1977)
42. डॉ0 सुरेश कुमार शैली विज्ञान (पृष्ठ 163)
43. शैली और शैली विज्ञान पृष्ठ 165
44. शैली विज्ञान और आलोचन की नई भूमिका (1972) डॉ0 रविन्द्रनाथ श्रीवास्तव।
45. डॉ0 सुरेश कुमार शैली विज्ञान (1977) पृष्ठ 165
46. डॉ0 विधानिवास मिश्रा, 'रीति विज्ञान' (1973) पृष्ठ 18
47. आलल्गा अखमनोवा दि प्रिंसिपल ऐंण्ड मेथड्स आफ लिंग्वोस्टाईलिस्टिक्स पृष्ठ 35
48. अज्ञेय, तार सप्तक द्वितीय संस्करण (पुनश्च)